Ques- क्रॉमवेल की विदेश-नीति का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
Describe in brief the foreign policy of Cromwell.

Ans- जेम्स प्रथम तथा चार्ल्स प्रथम के समय से ही विदेशी मामलों में लगातार असफलता और कमजोर कूटनीति के कारण यूरोप में इंग्लैण्ड का कोई महत्व नहीं रह गया था। चार्ल्स की मौत के बाद रम्प संसद ने प्रजातान्त्रिक शासन व्यवस्था की घोषणा की। इस घोषणा से सारे यूरोप में हलचल मच गई। इंग्लैण्ड में प्रजातंत्र की स्थापना से यूरोपीय देश खुश नहीं थे। आयरलैण्ड में विद्रोह पहले ही हो चुका था। स्कॉटलैण्ड प्रजातंत्र की सत्ता स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। सेना पर राजा के समर्थकों का अधिकार था। इंग्लैण्ड के उपनिवेशों में भी असंतोष की भावना पैदा हो चुकी थी। ऐसी परिस्थिति में विदेशी समस्याओं को सुलझाने में क्रॉमवेल को काफी मेहनत करनी पड़ी। गृह-कलह को शांत करने के बाद वह स्थल और जल सेना को संगठित कर यूरोपीय राजनीति में हस्तक्षेप करने को तैयार हो गया।

चार्ल्स प्रथम को मृत्यु दण्ड दिये जाने के कारण यूरोपीय देश क्रुद्ध थे। इसका परिणाम यह हुआ कि रूस के जार ने अंग्रेजी राजदूत का बहिष्कार कर दिया। फ्रांस का राजदूत इंग्लैण्ड से स्वदेश वापस लौट गया। यहाँ तक कि प्रोटेस्टेंट देशों ने भी इंग्लैण्ड से अपना सम्बन्ध तोड़ लिया। हॉलैण्ड ने सबसे पहले यह घोषणा की कि वह इंग्लैण्ड के प्रजातन्त्र शासन के विरुद्ध चार्ल्स द्वितीय की सहायता करेगा। क्रॉमवेल ने इन कठिनाइयों का बड़ी दृढ़ता से सामना किया तथा अपनी सफल विदेश नीति के आधार पर इन सारी आलोचनाओं का मुँहतोड़ जवाब दिया।

Scanned with CamScanner

क्रॉमवेल की विदेशनीति के तीन प्रमुख उद्देश्य थे —
I. प्रोटेस्टेन्टों के अधिकारों और स्वार्थ की रक्षा करना
II. स्टुअर्ट राजाओं के शासन को इंग्लैंड में पुनः स्थापित होने से रोकना (III) उपनिवेशों में इंग्लैण्ड के व्यापार को सुरक्षित रखना। इस प्रकार क्रॉमवेल की विदेश नीति का आधार साम्राज्यवाद एवं आर्थिकवाद था।

1. इंग्लैंड एवं हॉलैंड — क्रॉमवेल की साम्राज्यवादी नीति का पहला शिकार हॉलैंड हुआ। यद्यपि इंग्लैंड एवं हॉलैंड दोनों ही प्रोटेस्टेन्ट एवं गणतन्त्रात्मक देश थे फिर भी दोनों में व्यापारिक प्रतिद्वन्दिता चल रही थी। कारण कि दोनों के जीविका का आधार व्यापार ही था। इसके साथ ही अंग्रेजों एवं डचों के बीच शत्रुता के अन्य कारण भी थे। डचों ने ओरेन्ज के विलियम को छोड़ने से इन्कार कर दिया था। डचों ने स्टुअर्ट राजाओं के प्रति सहानुभूति दिखलायी थी तथा राज्य के राजदूत का अपमान किया था। गृहयुद्ध का फायदा उठाते हुए उन्होंने इंग्लैंड से जहाजी व्यापार छीन लिया था। इंग्लिश चैनल में अपना झण्डा अंग्रेजी जहाजों के सामने झुकाने से इन्कार कर दिया। इसके अतिरिक्त उत्तर सागर में उन्होंने अंग्रेजी मछुआरों के अधिकारों का उल्लंघन किया था। अंग्रेजों के दिमाग में एम्बायना हत्याकाण्ड की याद अभी भी ताजा थी। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को ईस्ट इंडीज क्षेत्र के साथ व्यापार करने का अधिकार भी नहीं दिया गया था। ईस्ट इंडीज क्षेत्र पर हॉलैण्ड का आधिपत्य कायम हो चुका था। समुद्री व्यापार पर डचों का अधिकार था, उन्हीं के जहाजों के द्वारा सामानों को ढोया जाता था। यह स्थिति इंग्लैण्ड के लिए असह्य थी क्योंकि उनकी समृद्धि के द्वार डचों ने बन्द कर दिया था।

1651 ई० में रम्प संसद ने जहाजरानी अधिनियम (Navigation Act) पारित किया। इसका डच व्यापार पर बुरा असर पड़ा। अधिनियम के अनुसार बाहर से आनेवाला माल या तो अंग्रेजों के जहाज से आता या उस देश को जहाज से आता जिस देश का माल होता। यह नियम डचों के लिए आपत्तिजनक था, क्योंकि उनका व्यापारिक कारोबार इसके चलते ठप पड़ गया। इस प्रकार जहाजरानी अधिनियम ने हॉलैंड तथा इंगलैंड के बीच युद्ध को अवश्यम्भावी बना दिया था।

संघर्ष का तात्कालिक कारण दूसरा ही था। फ्रांस और इंगलैंड के बीच पुरानी दुश्मनी थी। फलस्वरूप अंग्रेजों द्वारा फ्रांस के जहाजों की तलाशी ली जाती थी। जब डच के जहाजों की तलाशी आरम्भ हुई तो हॉलैंड ने इसका विरोध किया। इसी समय हॉलैंड स्थित अंग्रेजी राजदूत की हत्या कर दी गयी। इस हत्या से अंग्रेजों के आत्मसम्मान को चोट पहुँची। दोनों देश प्रतिष्ठा के प्रश्न पर डट गये। अंग्रेजों का कहना था कि इंगलिश चैनल पार करते समय डच जहाजों को इंगलिश जहाजों के सामने झण्डा झुका लेना चाहिए था लेकिन डचों ने इसे स्वीकार करने से इंकार कर दिया फलतः डचों एवम अंग्रेजी सेना के बीच 1652 ई० में युद्ध शुरू हो गया।

इस युद्ध में डचों की हार हुई तथा उनके अनेकों जहाज एवम् सैनिक पकड़े गये। व्यापार बन्द हो जाने से उनकी हालत और दयनीय हो गई। डचों का व्यापार चौपट हो गया, लेकिन अंग्रेजों

Page No.:
Date:

व्यापार को इससे बढ़ावा मिला। अन्ततः दोनों देशों के बीच 1651 ई० में एक सन्धि हो गई। समझौते के अनुसार डचों ने इंगलिश चैनल में अंग्रेजी झण्डा का सम्मान करने, राजतन्त्र के समर्थकों को देश से निकालने और एम्बायना के कत्लेआम की क्षतिपूर्ति करने को तैयार हो गया। उन्होंने इंगलैंड के जहाजरानी अधिनियम को भी स्वीकार कर लिया।

2. **डेनमार्क, स्वीडन और पुर्तगाल के साथ सन्धि —** डचों से सन्धि करने के बाद क्रामवेल ने प्रोटेस्टेन्ट राष्ट्रों का एक शक्तिशाली गुट कायम करने के उद्देश्य से डेनमार्क, स्वीडन तथा पुर्तगाल के साथ एक सन्धि की। इन देशों के साथ सन्धि करने से इंगलैंड को कई व्यापारिक सुविधाएँ प्राप्त हो गई। क्रामवेल को स्वीडन में एक बन्दरगाह व्यापार के लिए प्राप्त हो गया। उसे बाल्टिक सागर में अपना जहाज भेजने का अधिकार मिल गया।

3. **स्पेन और इंगलैंड के सम्बन्ध —** यद्यपि 1648 ई० में 30 वर्षीय युद्ध समाप्त हो चुका था फिर भी स्पेन और फ्रांस के बीच युद्ध चल ही रहा था। दोनों देश इंगलैण्ड की सहायता के इच्छुक थे। ट्यूडर काल के बाद यह पहला अवसर था जब इंगलैंड यूरोपीय राष्ट्रों के सम्बन्ध में मध्यस्थता का काम कर रहा था। स्पेन और फ्रांस दोनों ही इंगलैंड के दुश्मन थे। फ्रांस प्रजातन्त्रीय सरकार का विरोधी था और स्पेन कट्टर कैथोलिक राष्ट्र था। क्रामवेल सबसे पहले स्पेन के साथ निपटना चाहता था, उसने स्पेन के सामने दो माँगें रखी (1) स्पेन के अधीन देशों में रहने वाले प्रोटेस्टेन्टों को धार्मिक स्वतन्त्रता

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date :

दी जाए (ii) वेस्ट इण्डिज में अंग्रेजों को व्यापार करने की अनुमति दी जाए। इन दोनों मांगों को सुनकर स्पेन के राजदूत ने कहा था "यह मेरे राजा के दोनों आँखों को मांगने के बराबर है।" क्रामवेल चाहता था कि इनके पर इंग्लैंड का अधिकार हो जाए।

इंग्लैंड और स्पेन के बीच युद्ध के अन्य कारण भी थे। इन दोनों के बीच व्यापारिक शत्रुता थी। अटलांटिक एवं वेस्ट इण्डिज में अंग्रेजी जहाजों को परेशान किया जाता था। इस युद्ध का नया आयाम धार्मिक था। क्रॉमवेल ने अपने को यूरोप के प्रोटेस्टेन्टों का नेता समझता था। इसके अतिरिक्त विशाल न्यू मॉडल आर्मी (New Model Army) का खाली बैठना भी क्रॉमवेल के लिए एक समस्या थी। 1655 ई० में क्रॉमवेल ने स्पेन के उपनिवेश हिस्पनीओला पर आक्रमण कर दिया। आक्रमण असफल रहा लेकिन जमाईका पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

4. इंग्लैंड और ट्यूनीशिया — ट्यूनीशिया के शासक ने किन्हीं कारणों से कुछ अंग्रेजों को बन्दी बना लिया था। इसे क्रॉमवेल ने इंग्लैंड का अपमान समझा और इस अपमान का बदला लेने के लिए जल सेना की टुकड़ी को भूमध्यसागर में भेजा। अंग्रेजी जल सेना की टुकड़ी ने भूमध्यसागर में पहुँचकर ट्यूनीशिया पर आक्रमण किया और अंग्रेज कैदियों को छुड़ा लिया। ट्यूनीशिया से सन्धि के बाद वहाँ के शासक ने अंग्रेजों को अनेक व्यापारिक सुविधाएँ प्रदान की।

5. इंग्लैंड एवं सेवाॅय के प्रोटेस्टेन्टों की समस्या — सेवाॅय घाटी के कैथोलिक ड्यूक द्वारा अपने यहाँ के प्रोटेस्टेन्ट जनता पर अत्याचार किया जा रहा था।

Scanned with CamScanner

क्रॉमवेल ने इस अत्याचार के विरुद्ध धमकी दिया और ड्यूक से कहा कि वह अपनी प्रोटेस्टेन्ट जनता को पूर्व की तरह धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान करे। ड्यूक इस धमकी से डर गया और उसने प्रोटेस्टेन्ट जनता को पूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान की और अत्याचार को बंद करना पड़ा। इस मौके पर फ्रांस ने भी इंग्लैंड का साथ दिया।

6. **इंग्लैंड और फ्रांस के बीच सन्धि** — वाडुआ समस्या के समाधान के बाद क्रॉमवेल के दिल में फ्रांस के प्रति सहानुभूति पैदा हो गया थी। फलस्वरूप इंग्लैंड और फ्रांस के बीच में एक सुरक्षात्मक संधि हो गई। उस समय फ्रांस और स्पेन के बीच युद्ध चल रहा था। इस कारण उस संधि के अनुसार इंग्लैंड को स्पेन के विरुद्ध अपनी सेना भेजनी पड़ी। अंग्रेज जल सेनापति ब्लेक ने सांताक्रूज में चल से भरे कई स्पेनिश जहाजों को नष्ट कर डाला। फलतः स्पेन को जल सेना को भारी नुकसान उठाना पड़ा और वह काफी कमजोर पड़ गई। यद्यपि इस युद्ध में ब्लेक की मृत्यु हो गई, परन्तु विजय अंग्रेजों को ही हुई।

7 **डनकर्क पर विजय** — अंग्रेज डनकर्क पर विजय प्राप्त करना चाहते थे ताकि वे डचों पर लगाम लगा सकें और यूरोप में प्रवेश का रास्ता बना सके। फ्रांस के सहयोग से क्रॉमवेल को इस काम में सफलता मिल गई। इससे यूरोपीय महाद्वीप का ~~फाटक~~ फाटक अंग्रेजों के लिए खुल गया और अंग्रेजी व्यापार को काफी बढ़ावा मिला।

क्रॉमवेल की विदेशनीति का मूल्यांकन — क्रॉमवेल की कूटनीति से उसकी परराष्ट्र नीति शानदार रहग

समाप्त रहा। स्पेन को स्थानान्तरण राजाओं के अधीन इंग्लैंड की प्रतिष्ठा स्थान से चुकी थी, परन्तु जेम्स उसकी प्रतिष्ठा काफी बढ़ गई। स्पेन के पराजय से इंग्लैंड का व्यापार काफी उठा और उसकी जो सेना की ताकत काफी बढ़ गई। स्पेन के पराजय से निश्चिन्त होकर अंग्रेज जनता उप-निवेशों की स्थापना करने लगे। डनकर्क विजय के बाद यूरोपीय महाद्वीप में प्रवेश का द्वार अंग्रेजों के लिए खुल गया। इस प्रकार क्रॉमवेल की गृहनीति की तुलना में उसकी विदेशनीति ज्यादा सफल रही। सीरिंडन का मत है कि "घर में क्रॉमवेल की महानता वैदेशिक महानता की केवल छाया मात्र है"।

क्रॉमवेल की विदेशनीति के दोष — क्रॉमवेल की विदेश नीति में कुछ दोष भी थे। सर्वप्रथम वह फ्रांस की बढ़ती हुई शक्ति का अन्दाजा नहीं लगा सका। स्पेन की तुलना में फ्रांस उन्नतशील देश था। आर्मेडा की लड़ाई के बाद स्पेन की शक्ति घटती जा रही थी। अतः यदि क्रॉमवेल स्पेन के बदले फ्रांस को अपना निशाना बनाया होता तो उससे यूरोपीय राष्ट्रों को शक्ति-सन्तुलन में सुधार की आशा थी परन्तु उसने फ्रांस के साथ मित्रता करके चौदहवें लुई को अधिक शक्तिशाली बना दिया। आगे चलकर फ्रांस यूरोपीय राष्ट्रों की शांति, सुरक्षा और स्वतंत्रता के लिए खतरनाक साबित हुआ।

क्रॉमवेल की विदेश नीति की एक कमजोरी यह भी थी कि उसमें धर्म की प्रधानता थी। उस समय वैदेशिक मामलों में धर्म की प्रधानता समाप्त हो रही थी। धर्म को राजनीतिक आधार बना कर क्रॉमवेल समय से पीछे जा रहा था। स्वीडन एवं

डेनमार्क प्रोटेस्टेन्ट होते हुए भी एक-दूसरे के दुश्मन थे। इसी प्रकार फ्रांस और स्पेन भी एक-दूसरे के दुश्मन थे।

डनमार्क की विजय इंग्लैंड के लिए लाभदायक रही परन्तु आगे चलकर उसका परिणाम इंग्लैंड के हित में अच्छा नहीं हुआ। डचों का हार जाकर कर महाद्वीप में प्रवेश पाने के बाद इंग्लैंड को महाद्वीपीय संकट में उलझना पड़ा जिससे बाद में भारी नुकसान उठाना पड़ा।

क्रॉमवेल की साम्राज्यवादी नीति सैनिक शक्ति पर टिकी हुई थी। युद्ध में सफलता के बावजूद जनता उससे नाखुश थी। क्योंकि उसे खर्च का अत्यधिक बोझ उठाना पड़ रहा था। शत्रुओं के चलते देश का भविष्य खतरे में पड़ गया था साथ ही सैनिक एवं राजनीतिक नेताओं में शक्ति के लिए लगातार संघर्ष ~~चल~~ चल रहा था। इन तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि क्रॉमवेल की विदेश नीति से इंग्लैंड की आन्तरिक समस्याएं जटिल बन गई थी।